3164

मेरठ जिले में अपराध का प्रतिरूप : एक भौगोलिक विश्लेषण

(16)

चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
की
पी–एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध का सारांश

शोध निर्देशक :
डॉ० नरेश कुमार
एम०ए०, पी-एच०डी०
एल-एल०बी०, डी०लिट्०
एसोसिएट प्रोफेसर

शोधकर्त्री:
पायल
एम०ए०, एम०फिल्०

भूगोल विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ

2021

सारांश

अपराध एक सार्वभौमिक सत्य है। अर्थात् प्रत्येक समाज में यह प्रवृत्ति पायी जाती है। किसी समाज या क्षेत्र में इसकी मात्रा अधिक या कम हो सकती है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अपराध समाज विरोध व्यवहारों को कहा जा सकता है, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अपराध ऐसे व्यवहारों को कहा जा सकता है जो कानून विरोधी हो। अपराध हर एक क्षेत्र में विभिन्न प्रकार जैसे– डकैती, चोरी, वाहन लूट, बलवा, बलात्कार, दहेज हत्या, हत्या आदि अपराधी और अपराध पाये जाते हैं। अपराध देश और समाज के लिए हानिकारक है। इसलिए अपराध की विभिन्नता को देखने के लिए क्षेत्रीय विभिन्नता बहुत जरूरी है।

मेरठ जनपद में अपराध के अनेक कारक हैं, जैसे – सामाजिक कारक, आर्थिक कारक, राजनैतिक कारक, भौगोलिक कारक व शैक्षिक कारक। इन कारकों के अन्तर्गत विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया गया है, जो कि अपराध को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुये हैं। किस प्रकार सामाजिक–आर्थिक एवं राजनैतिक परिस्थितियाँ मेरठ में अपराध को बढ़ावा देती हैं। इन सबके साथ-साथ भौगोलिक परिस्थितियाँ भी अपराध को प्रभावित करती हैं।

अपराध को बढ़ाने में धरातलीय संरचना की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। नदी, घाटी, पहाड़ी तथा टेढ़े-मेढ़े रास्ते, जो अपराधियों को छिपने के लिए अनुकूल परिस्थिति उपलब्ध कराते हैं। जिससे इन क्षेत्रों में अपराध अधिक पाये जाते हैं। इसी प्रकार खादर व बांगर क्षेत्र भी अपराध को प्रभावित करते हैं जैसे मेरठ जनपद के गंगा खादर क्षेत्र में, जहाँ भूमि अनुपजाऊ तथा रेतीली है और यह क्षेत्र वर्ष भर पानी में डूबा रहता है जिससे लोगों को जीविका चलाने में प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। यह क्षेत्र पिछड़ा होने के कारण यहाँ साक्षरता दर भी बहुत कम पाई जाती है जिससे लोग चोरी, बलात्कार,

अपहरण, लूट आदि अपराध करते हैं। अधिकतर लोग ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर जाकर बस गये हैं। अशिक्षित होने के कारण नगरीय क्षेत्रों में भी इन्हें नौकरी नहीं मिल पाती है, जिससे ये लोग नगरीय क्षेत्रों में अपराधिक क्रियाओं में संलग्न हो जाते हैं।

अपराध में धरातल के प्रभाव को स्पष्ट करने के लिए खादर Vs बांगर एवं नगरीय Vs ग्रामीण क्षेत्रों को लिया गया है। कुल ग्रामों में से लॉटरी के द्वारा खादर व बांगर क्षेत्र के पाँच–पाँच ग्रामों का चयन किया गया है। खादर व बांगर क्षेत्र के चयनित ग्रामों में प्रमुख रूप से घटित अपराधों को लिया गया है। इसमें केवल वर्ष 2017 के आँकड़े एकत्रित किये गये हैं। आँकड़ों को एकत्रित करने में प्रश्नावली निर्मित की गयी है फिर चयनित ग्रामों में स्वयं जाकर प्रश्नावली को भरा गया है। प्रश्नावली से प्राप्त उत्तरों के आधार पर तालिकाएँ बनायी गयी हैं और फिर उनकी विस्तृत रूप से व्याख्या की गयी है।

खादर Vs बांगर में अपराध के अध्ययन को पूर्ण करने में केवल प्राथमिक आँकड़ों को लिया गया है। इन चयनित क्षेत्रों से सम्बन्धित द्वितीयक आँकड़े किसी भी सरकारी कार्यालय एवं स्वयंसेवी संस्था के पास उपलब्ध नहीं हैं।

इसके अतिरिक्त अध्ययन क्षेत्र में नगरीय Vs ग्रामीण क्षेत्रों में अपराध पर धरातल के प्रभाव का भी अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में आठ प्रकार के अपराध लिये गये हैं। इन घटित अपराधों से सम्बन्धित आँकड़े वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कार्यालय, मेरठ से वर्ष 2003 से 2012 तक एकत्रित किये गये हैं।

चयनित ग्रामों का अध्ययन करने के लिए प्रश्नावली तैयार की गयी है। प्रत्येक चयनित ग्राम से कुल परिवारों में से 20 परिवारों का प्रतिचयन विधि के आधार पर सर्वेक्षण किया गया है। परिवारों के चयन में आर्थिक आधार, शैक्षिक आधार एवं जातिगत आधार को ध्यान में रखा गया है। प्रश्नावली से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर तालिकायें बनायी गयी हैं एवं उनका विश्लेषण किया गया है। किसी भी देश, राज्य एवं जिले की आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति के लिए वहाँ पर अपराध मुक्त वातावरण का होना आवश्यक है। अपराध

के कारण मेरठ ही नहीं बल्कि देश के अन्य भागों में बहुत से उद्योग बन्द हो चुके हैं एवं बहुत से बन्द होने के कगार पर हैं। इसलिए आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षिक उन्नति के लिए अपराध का नियंत्रण होना आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन में मेरठ के अपराध का क्षेत्रीय प्रतिरूप सन् 2003 से 2012 तक प्रस्तुत किया गया है। मेरठ में कुल 28 पुलिस थाने (एक महिला थाना सहित) हैं। मेरठ में अपराध का क्षेत्रीय प्रतिरूप ज्ञात करने के लिए आठ प्रकार के अपराधों के दस वर्षों (2003-2012) के आँकड़े थाना स्तर पर एकत्रित किये गये हैं। आठ प्रकार के अपराध यथा– डकैती, वाहन लूट, चोरी, हत्या, बलवा, बलात्कार, छेड़खानी एवं दहेज हत्या अध्ययन में लिये गये हैं।

किसी राज्य के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए जनसंख्या अनिवार्य संसाधन है। राज्य के संतुलित विकास के लिए जनसंख्या का संतुलन बना रहना परम आवश्यक है, जिसके लिए अनुकूलतम जनसंख्या की अपेक्षा की जाती है। जनसंख्या की अधिकता एवं जनसंख्या की न्यूनता दोनों ही परिस्थितियाँ राज्य के विकास में असंतुलन पैदा कर देती हैं। इस परिप्रेक्ष्य में भारत में जनसंख्या अधिकता की स्थिति है।

देश के आर्थिक विकास की गति बनी रहे तथा सामाजिक ताना–बाना सुदृढ़ बना रहे, उसके लिए जरूरी है कि देश के प्रत्येक नागरिकों की पहुँच संसाधनों तक हो। जनसंख्या की अधिकता के कारण लोग अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए गैर कानूनी तथा अनैतिक कार्यों में लिप्त हो जाते हैं, जिससे समाज की सामाजिकता समरसता भंग हो जाती है। जिसके परिणामस्वरूप अनेक प्रकार के अपराधों का जन्म होता है। अपराध के कारण उत्पन्न अव्यवस्था से देश के आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, क्योंकि अपराधों से निपटने में बहुमूल्य समय एवं आर्थिक संसाधनों का नुकसान होता है।

वर्तमान समय में बढ़ते शहरीकरण तथा जीवन यापन की आपाधापी के बीच अपराध की दर में तेजी से वृद्धि दर्ज की गयी है, जिसका प्रमुख कारण बढ़ती बेरोजगार तथा पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण है। कोई भी मनुष्य अपनी प्रवृत्ति से हिंसक नहीं होता

बल्कि परिस्थितियाँ उसको हिंसक एवं अपराधी बना देती हैं। सामाजिक रूप से नैतिक मूल्यों में गिरावट एवं शिक्षा का निम्न स्तर, आर्थिक रूप से बेरोजगारी एवं निम्न जीवन स्तर तथा सांस्कृतिक रूप से अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के बजाय पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण आदि कारण अपराधों के लिए पृष्ठभूमि तैयार करते हैं।

अपराधों पर नियंत्रण लगाने हेतु पुलिस प्रशासन के साथ-साथ जन-भागीदारी की भी आवश्यकता है। समाज में बढ़ते अपराध पर नियंत्रण लगाने के लिए पुलिस प्रशासन को सशक्त बनाने की आवश्यकता है जिसके लिए जनसंख्या के अनुपात में पुलिस कर्मियों की संख्या निर्धारित मानकों के अनुसार होनी चाहिए। उत्तर प्रदेश राज्य भारत का सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य है। जिसके अन्तर्गत मेरठ जनपद एक प्रमुख दस लाखी नगर मेरठ महानगर है। मेरठ जनपद में अपराध के कालिक एवं स्थानिक विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि अपराध की बढ़ती दर का कारण जनसंख्या के अनुपात में पुलिस बल की संख्या निर्धारित मानकों से बहुत कम है।

भारत आज विकास की तीव्र धारा में अग्रसर है जिसके कारण अपराध एवं अपराध की प्रवृत्तियों में भी परिवर्तन आया है। अपराध को समाज के विरोध के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जनपद मेरठ में पिछले कुछ वर्षों में आर्थिक विकास के साथ-साथ अपराध के स्तर में भी वृद्धि दर्ज की गयी है। वर्तमान समय में प्रशासन के द्वारा की गई कार्यवाही से कुछ अपराधों के मामलों में कुछ स्थिरता आयी है।

बल्कि परिस्थितियाँ उसको हिंसक एवं अपराधी बना देती हैं। सामाजिक रूप से नैतिक मूल्यों में गिरावट एवं शिक्षा का निम्न स्तर, आर्थिक रूप से बेरोजगारी एवं निम्न जीवन स्तर तथा सांस्कृतिक रूप से अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के बजाय पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण आदि कारण अपराधों के लिए पृष्ठभूमि तैयार करते हैं।

अपराधों पर नियंत्रण लगाने हेतु पुलिस प्रशासन के साथ-साथ जन-भागीदारी की भी आवश्यकता है। समाज में बढ़ते अपराध पर नियंत्रण लगाने के लिए पुलिस प्रशासन को सशक्त बनाने की आवश्यकता है जिसके लिए जनसंख्या के अनुपात में पुलिस कर्मियों की संख्या निर्धारित मानकों के अनुसार होनी चाहिए। उत्तर प्रदेश राज्य भारत का सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य है। जिसके अन्तर्गत मेरठ जनपद एक प्रमुख दस लाखी नगर मेरठ महानगर है। मेरठ जनपद में अपराध के कालिक एवं स्थानिक विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि अपराध की बढ़ती दर का कारण जनसंख्या के अनुपात में पुलिस बल की संख्या निर्धारित मानकों से बहुत कम है।

भारत आज विकास की तीव्र धारा में अग्रसर है जिसके कारण अपराध एवं अपराध की प्रवृत्तियों में भी परिवर्तन आया है। अपराध को समाज के विरोध के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जनपद मेरठ में पिछले कुछ वर्षों में आर्थिक विकास के साथ-साथ अपराध के स्तर में भी वृद्धि दर्ज की गयी है। वर्तमान समय में प्रशासन के द्वारा की गई कार्यवाही से कुछ अपराधों के मामलों में कुछ स्थिरता आयी है।